Certificate of Publication

is awarded to

डॉ. सुभाष राठोड

for the paper titled

" निर्मला पुतूलकी कविताओ में स्त्री चिंतन"

Published in *Nibandha Mala* Journal Vol-12, Issue-02 February 2020 ISSN: 2277-2359

International Refereed and Indexed Journal for Research Publication

With Impact Factor 5.1 UGC Care Listed

S.N. Sharma

Editor-in-Chief

editor@hindijournals.org

UGC

University Grants Commission

EDUINDEX

Scanned with CamScanner

ISSN 2277-2359
Vol-12-Issue-02
February 2020

" निर्मला पुतूलकी कविताओ में स्त्री चिंतन"

पो. आ. सुभाष सलोज

कला,विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,नळदुर्ग

ता. तुळजापूर जि. उस्मानाबाद.

वर्तमान समय मे हमे यह देखने को मिल रहा है कि मानव जीवन कितना बहूरूपी तथा बहुआयामी होता नजर आ रहा है। परिवर्तन के कारण आज हर क्षेत्र में मनुष्य जीवन दॉव पर लग रहा है। आज के दौर मे विश्व के हर कोने में इन्सान आंतकित ढंग से जीवन जी रहा है। चारो ओर–देश–देश से, सत्ता–सत्तासे, तो इन्सान. इन्सानों से लढ रहा है। अन्याय, अत्याचारों को खडा बेबस इन्सान खूली आँखो से तबाही का चित्र देख रहा है। आज आदमी की तरह प्राद्योगिकी, भूमंड लीकरण या बाजारवाद से हर इन्सान परेशान है। बहूराष्ट्रीय कंपनी के राज ने आज–इन्सान को तबाह कर रही है। अर्थात एक ओर मानव विश्व को मुट्ठी में करना चाहता है तो दूसरी ओर अपने आप उसके अस्तीत्व से, जल, जमीर, तथा जमीन से टूट रहा है।

हिंदी की आदिवासी कविता के कवि सवर्णवादी वर्चस्व को चुनौती देते हुए अपनी पहचान बनाई है,उसनें निर्मला पुतूल और अनुज लुगुन प्रमुख है। वैसे तो इनकी आदिवासी कवियों की लंबी परंपरा रही है। उनकी कविताएँ दमन के खिलाफ प्रतिकार, प्रतिरोध का हाथियार चूनती है जो वर्तमान में जरूरी था। आदिवासी साहित्य कल्पना का साहित्य नहीं है। यह सृष्टि, धरती, और प्रकृति के साथ आदिवासियों के रिश्ते का जीवंत साहित्य रहा है।

निर्मला पुतूल आदिवासी कवियों में सशक्त रचना रखती है ।'नगाडे की तरह बजते शब्द' निर्मला पूतूल का प्रमुख काव्य संग्रह रहा है जो सामाजिक न्याय की गुहार लगाता है। अधिकतर उनकी कविताएँ सामाजिक शोषण, अन्याय केसवालों को कर्मठता के साथ उठाती है। निर्मला पुतूल की कविताओं में आदिवासी जन जीवन की त्रासदी तथा सामाजिक रूढि, परम्परा तथा सामाजिक दायरे में दुःख को अधिकाशतःझेलती नारियों की आस्मिता, स्त्री जीवन की त्रासदी तथा वास्तविक यथार्थता को स्पष्ट करती हुई निर्मला पुतल लिखती है"आदिवासी महिलाएँ जिनके पास भूख है, भूख में से दूर तक पसरी उबड–खाबड धरती है, सपने है, सपनों से दूर तक पीछा करती अधूरी इच्छाएँ है, बेहताशा कभी पूरब में कभी पश्चिम की ओर ...।"अर्थात उनकी कविताएँ सच्चे जीवन की दारूण त्रासदी का प्रतिकात्मक रूप है। आज के भारत में स्वतंत्रता के 70 साल बाद भी आदिवासी ,गरीब, मजदूर बंजारा, या अन्य घूमंतु समाज में स्त्री हो या पूरूष उँची जातियों से प्रभावित हो विवशता से जी रहा है।

निर्मल पुतूल की कविताओ में मूलतः मानवतावादी विचारधारा प्रगट होती है, जो परम्परागत ढंग से उनके उपर जो अन्याय, अत्याचार होता था उनसे मुक्ति की मांग करती है। साथ ही आदिवासियों पर होने वाले शोषण का विरोध करती है। साथ ही आदिवासी नारी–पुरूष तथा जन मानस की पीडा घुटन शोषण दमन का विरोध कर उन्हे मुक्त कराने की बात करती है। आदिवासी समाज की एक जागरूक जुझारू महिला कवि के रूप में सदैव संघर्षरत रहती है। उनकी कविताएँ धारदार शस्त्र से प्रतिपक्ष पर सीधा प्रहार करती है। आदिवासी संवेदना को विद्रोही विचारों के माध्यम से प्रस्तुत करती है। उसकी वाणी ओजपूर्ण तथा व्यंग्यत्मक शैली में अर्थपूर्णता को स्पष्ट करती है। एक नारी के रूपमें आदिवासी पुरूषों के साथ साथ महिलाओं का जीवन दर्शन, युगबोध, संघर्षमय जीवन, वेदना, आधिकार विहीनता, अत्याचारीत जीवन यातना को स्पष्ट करती है। आज भी आदिवासियों की चिंता कम नहीं हुयी

Copyright©authors

Scanned with CamScanner

ISSN 2277-2359
Vol-12-Issue-02
February 2020

आज भी अनेक समस्याओ से भरा वास्तव नजर आता है। शोषण और अन्याय, अत्याचार के विरोध में खडे रहना उनका स्वभाव है। साथ ही समाज के व्याप्त शोषणवृति, धार्मिक अडबंर, सामाजिक कुरीतियों पर तीखा प्रहार करती है। डॉ. भीमसिंह निर्मला पुतुल की कविताओं के संबध में लिखते है कि "निर्मला पुतुल के काव्य मे आदिवासी स्त्री की छवि प्रमुखता से उभर कर आयी है। आदिवासी स्त्री का यह रूप निश्चित तौर पर गहन सामाजिक विश्लेषण, मानसिक अतः रचना और समाज के यथार्थ से सीधे तौर पर जुडा हुआ है। आदिवासी स्त्रियों के जीवन को वर्तमान सभ्यता के विसा का मौडान लगनको आतूर हो उठा है। आदिवासी स्त्रियों के मन, मानसिक कविता का विषय बनाकर उसकी चिंताओं से कवयित्री ने हिंदी काव्य की विषय वस्तु को विस्तारित करने का असीम और मौलिक कार्य किया है।"1

आधूनिकीकरण के कारण या जंगली जीवन पध्दति के विस्थानिता के कारण आधिकांश नारी–पुरूष शहरों की ओर टांडे के टांडे रोजी रोटी के लिए जा रहे है। जहॉ पर उन्हे अधिकांश समस्याओं का सामना करना पड रहा है। पुरूषों के साथ साथ आदिवासी नारियाँ विस्थापित परिस्थिती के कारण गंभीर समस्याओं घिरी तथा सुलतानी संकटों का सामना कर रही है। भूख,गरीबों के कारण या पापी पेट भरने हेतू गांव, घर, जमीन,छोडकर, शहरों की ओर जा रहे है, परंतु वहाँ की अन्याय का शिकार हो रहे है। निर्मला पुतूल के काव्य संग्रहो में 'नगाडे की तरह बजते शब्द' और 'अपने घर की तलाश में स्त्रीयों की अस्मिता' तथा वर्तमान सवालों को मुख्य रूपसे उपस्थित किया है।

निर्मला पुतुल की कविताओं का मुख्य स्वर 'शोषक' वर्ग के विरोध में रहा है। वर्तमान समय में विकासात्मक या मॉडेल के नाम पर चारों ओर उसका स्वरूप बदल रहा है। गांव के गांव विकास के नाम पर उजड रहे है। बडे बडे जंगल तोडे जा रहे है । आदिवासियों की बस्तियाँ उजाडी जा रही है। ऐसे समय में पुरूषी व्यवस्था में या विकासवाद के नाम पर नारियाँ की मानसिकता उजड रही है। नारियों के मन, मानस की चिंता न समाज को है न ही प्रशासन व्यवस्था को। इसलिए निर्मला पुतूल उनकी चिंताओं की त्रासदी तथा मानसिकताओं को विषय बनाकर कविताएँ लिखती है। पुतुल सामाजिक स्थितियों से बेचैन है,आदिवासी समाज की स्त्री की व्यथा, अकांक्षा, स्वप्न और संवेदना को बडी सशक्तता के साथ व्यक्त करती है। उनका काव्य संग्रह 'नगाडे की तरह बजते शब्द' की अधिकांश कविताओं में नारियों की समस्या तथा समाजगत प्रशासक की क्लिष्ट व्यवस्था पर प्रहार करती है। स्वतंत्रता के सत्तर साल बाद भी अनेक आदिवासी तांडों में दुःख दरिद्र, भूखमरी, अंध नंगे लोग,कुरूप व्यवस्था का चित्र दिखायी देता है। अनेक समुदाय नंग–धंडग आवस्थामे घूमता नजर आता है तो प्रशासन व्यवस्था से जुडे लोग मौज–मस्तीसे उनके नंग –धडंग तन का चित्र खिंचनें में मर्दानगी समझते है। वैसे आदिवासी स्त्रियों को विस्थापन के कारण अनेक गंभीर संकटो का सामना करना पडता है। आदिवासियों की आकांक्षा और मानसन्मान को बेबस टेंस लगती है तथा अन्य सवर्ण या पैसेवालो से जब पीडीत नारियाँ कराह उठती है तब अंतरात्मा झनझना उठती है। अपनी बहू–बेटियों की इज्जत से जब लोग खेलने लगते है तब नारी का अंतरिक रूप आतंकित नजर आता है। तथा उनकी आंतरिक पीडा अस्मिता के लिए लडती हुई दिखायी देती है। इस संबंध में निर्मला पूतुल लिखती है कि, "ये वे लोग है जो दिन उजाले में

मिलने से कतराते है

और रात के अंधेरे में

मिलने का मॉगते है आमंत्रण

ये वे लाग है जो रात का लबादा ओढे

शहरके अखरी छोर पर

गिरा अपने अंदर की सारी गंदगी

गंदाना रहे है हमारी बस्तियॉ

Scanned with CamScanner

ISSN 2277-2359
Vol-12-Issue-02
February 2020

Arts Science & Commerce College

ये वे लोग है जो खीचते है

हमारी नंगी–अधनंगी तस्वीरे

और संस्कृति के नाम पर

करते हमारी मिट्टी का सौदा

उतार रहे है बहस में हमारे ही कपडे

जो हमारे बिस्तर पर करते है

हमारी बस्ती का बलात्कार

और हमारी ही जमीन पर खडे हो

पूछते है हमसे हमारी औकात.।"[2]

निर्मला पुतुल की कविताओं में आदिवासी स्त्री के मन के अनेक पक्ष को तराशा है। आदिवासी क्षेत्रों में हो रहे नर संहार को कवयत्री स्पष्ट शब्दों मे फटकार लगाती है। आदिवासी ही नहीं सवर्णो या बडे–बडे शहरों,महानगरो में आज भी नारियों की स्थिती सुरक्षित नहीं है। आज भी अनेक प्रकार से नारियाँ परम्परागत व्यवस्था के दायरों में जकडी हुओ है। निर्मला पुतुल संसारिक वास्तविकता के अनुभव को वयां करती है। अहंमवादी पुरूषी सत्ता के विरोध में स्त्री अस्मिता की खोज करती हुओ लिखती है

" क्या तूम जानते है

एक स्त्री के समस्त रिश्ते का व्याकरण

बता सकते हो तुम

एक स्त्री को स्त्री दृष्टी से दिखते

उनके स्त्रीत्व की परिभाषा?

जानते नहीं

तो फिर जानते क्या हो तुम

रसोई और बिस्तर के गणित से परे

एक स्त्री के बारे में।"[3]

इस प्रकार समाज को फटकार लगती है कि, पुरूष या पितृ सत्ताक व्यक्ति नारी को आजतक समझ नहीं पाया है। नाही वह उसकी अस्मीता या दुःख दर्द को, या ना ही उसके व्यवहार को। नारी केवल पुरूष की वासना का शिकार बनी हुओ है। उसके दुःख भरे जीवन का अंकन नहीं कर पाया। साथ ही एक मजदूर के रूपमें या उसके श्रम के महत्वको कोई नहीं समझ पा रहा है। इस संबंध नारी के वास्तविक चित्र से स्पष्ट करती हुओ 'पहाडी स्त्री 'कविता में लिखती है

" वह जो सर पे सूखी एक लकडियों का गठ्ठर साडे

पहाड से उतर रही है

Copyright©authors

Scanned with CamScanner

ISSN 2277-2359
Vol-12-Issue-02
February 2020
Arts Science & Commerce College

पहाड़ी स्त्री

अभी–अभी जाएगी बाजार

और बेचकर सारी लकड़ियाँ

बुझाएगी घर–घर के पेट की आग

चादर में बच्चों को

पीठ पर लटकाएँ

धान रोपती पहाड़ी स्त्री

रोप नहीं है अपना पहाड़–सा दुःख।"[4]

इस तरह पहाड़ों में जीवन बिताती हुई नारी की दुःख भरी कहानी, बच्चों की फिक्र कराती और पापी पेट को भरने के लिए भरसक प्रयत्न करती आदिवासी नारी की वास्तविकता को व्यक्त करती है। उनकी अनेक कविताओंमें नारी सक्षमीकरण की अभिभाषा भी स्पष्ट हुई है। साथ ही आदिवासी नारी का शोषण धर्म, जाति,श्रम के नामपर भी हो रहा है। इसलिए शोषण ग्रस्त नारी का जीवन तनावपूर्ण स्थिती में देखा जा सकता है। निर्मला पुतुल समाज में नारियों की जो उपेक्षा की जाती है उसे व्यक्त करती हुई लिखती है।

" तन के भूगोल के परे

एक स्त्री के मन की गाँठे खोलकर

कभी पढा है तूमने

उसके भीतर का खौलता इतिहास ।"[5]

निर्मला पूतुल आदिवासी जीवन की रोजमर्रा जिंदगी का साक्ष जनता या पाठको के सामने बयान करना चाहती है ।आदिवासी नारियों के उत्थान की बात तथा नारियों के विविध पहालूओं को वाणी देकर व्यक्त करना चाहती है। नारी के प्रति शोषण के षडयंत्र की कविताओं को व्यक्त करती हुई लिखती हुई समाज को तमाचा मारती हुई ऐलान करती है कि,

" जवानी में वेश्या

बुढापे में डायन

ऐसे ही कहते है लोग

लोगों का क्या है?

लोग कुछ भी कहते है

एक ऐसी चीज

जिसे घाट में, बाट में

जहाँ मिले, थाम लो

जब जी चाहे अंग लगा लों

Copyright@authors
Scanned with CamScanner

ISSN 2277-2359
Vol-12-Issue-02
February 2020

Arts Science & Commerce College Naldurg

पूरी दर्द हवस तो त्याग दो

न चीख न पुकार। "[6]

यहाँ कवयत्रीने घूमंतू समाज के आदिवासी नारियों के प्रति होनेवाले अत्याचार तथा समाज में नारी के हालात को स्पष्ट करती है। पुतुल ने स्त्री जीवन की त्रासदी को अभावग्रस्त जिंदगी को,उनके भाव संवेदनाओं को अधिक स्पष्ट करती है। पुतुल की कविताएँ आदिवासी समाज तथा नारियों, लडकियों की समस्याओं,उनकी पीडा, दुःख दर्द को पाठकों के सामने रखते है। जंगल हो या शहर, जहान हो या जमीन, गांव हो या हाट बाजार हर जगह आदिवासी नारियों की समस्या समान, आतंकित ,जान लेवा जिंदगी बीता रही है। इन्सान हैवान बन कर उनका शोषण कर रहा है। वेश्या बनाकर तन, श्रम के नामपर खून पी रहा है। संस्कृति के या संस्कार के नाम पर मन को शोषित कर रहे है। इस प्रकार पुतुल की कविताएँ आदिवासी समाज के साथ–साथ आदिवासी नारियों की मन समस्याओं उनकी भाव–भावनाओं तथा भूख, गरीबी, श्रमहारी का मार्मिक वर्णन कर आदिवासियों की नारियों को सामाजिक चेतना में लाकर उन्नत कराना उनकी प्रमूख वैचारिकता रही है।

संदर्भ
1) आदिवासी केंद्रीत हिंदी साहित्य– निर्मला पुतूल पृ. 190
2) विरिया मूर्म के लिए कविता – निर्मला पुतुल पृ. 14
3) नगाडे की तरह बजते षब्द – निर्मला पुतुल पृ.08
4) नगाडे की तरह बजते षब्द – निर्मला पुतुल पृ.10
5) पहाडी स्त्री' कविता – निर्मला पुतूल पृ.36
6) 'औरत' कविता निर्मला पुतुल पृ.19

PRINCIPAL
Arts Science & Commerce College
Naldurg, Dist.Osmanabad-413

Copyright©authors

Scanned with CamScanner